पुनरावलोकन नोट्स

- व्यावहारिक व्याकरण
  - शब्द व पद में अंतर
  - रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर
  - समास
  - अशुद्धि शोधन
  - मुहावरे
- रचनात्मक लेखन
  - अनुच्छेद लेखन
  - अनौपचारिक पत्र
  - सूचना लेखन
  - संवाद लेखन
  - विज्ञापन लेखन
- साहित्य
  - गद्य खण्ड
  - काव्य खण्ड
  - पूरक पाठ्यपुस्तक

व्यावहारिक व्याकरण

शब्द व पद में अंतर

वर्णों के व्यवस्थित और सार्थक समूह को शब्द कहा जाता है। शब्द भाषा की आधार इकाई है। जब शब्द व्याकरणिक नियमों में बंधकर वाक्य में प्रयोग हो जाता है तो वह पद बन जाता है। वह वाक्य का अर्थ समझने में मदद करता है।

जैसे- कमल, पानी, तालाब आदि शब्द हैं।

तालाब के पानी में कमल खिले हैं। यहाँ तालाब संज्ञा का कार्य कर रहा है। कमल विधेय बन गया है। अत: वाक्य में प्रयोग के बाद शब्द कर्ता, संज्ञा अथवा सर्वनाम आदि बन जाता है।

DISHA™ Publication Inc

रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर

रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं–

1. सरल वाक्य 2. संयुक्त वाक्य 3. मिश्र वाक्य।

(1) **सरल वाक्य** में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है। सरल वाक्य में एक ही क्रिया होती है। जैसे – राम आता है। यहाँ 'राम' उद्देश्य है तथा 'जाता है' विधेय है।

(2) **संयुक्त वाक्य** में एक से अधिक प्रधान उपवाक्य समुच्चय बोधक अव्यय द्वारा जुड़े होते हैं। ये उपवाक्य अपना स्वतंत्र अर्थ भी देते हैं और जुड़कर पूरा अर्थ प्रदान करते हैं। जैसे – राम मोहन का भाई है और वह दसवीं कक्षा में पढ़ता है। यहाँ 'राम मोहन का भाई है' वाक्य पूरा है तथा 'वह दसवीं कक्षा में पढ़ता है' भी पूरा है। दोनों जुड़कर राम के विषय में जानकारी को पूरा करते हैं।

(3) **मिश्र वाक्य** में दो या दो से अधिक उपवाक्य जुड़े होते हैं। इसमें एक प्रधान उपवाक्य होता है तथा अन्य आश्रित उपवाक्य होते हैं। ऐसे वाक्य में एक से अधिक समापिका क्रियाएँ होती हैं और एक-दूसरे के बिना पूर्ण अर्थ समझने में कठिनाई होती है जैसे- (i) यदि अभिनव परिश्रम करता, तो पास हो जाता। (ii) मैं जानता हूँ कि तुमने उत्तीर्ण होने के लिए दिन-रात एक कर दिया। यहाँ प्रथम वाक्य में 'यदि अभिनव परिश्रम करता' प्रधान उपवाक्य है तथा 'पास हो जाता' आश्रित उपवाक्य है।

समास

दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जब कोई नया एवं सार्थक-संक्षिप्त शब्द बनता है तो उसे समास कहते हैं। संक्षिप्तीकरण ही इसकी विशेषता है। जैसे - राजपुत्र- राजा का पुत्र। देशभक्ति- देश की भक्ति या देश के लिए भक्ति।

समास के छह भेद होते हैं-

1. अव्ययीभाव 2. तत्पुरुष 3. द्वंद्व 4. द्विगु 5. बहुव्रीहि 6. कर्मधारय

1. **अव्ययीभाव समासः** अव्यय का अर्थ है अपरिवर्तनीय। इसमें समस्त पद अव्यय बन जाता है। इसमें पूर्वपद प्रधान होता है, उत्तरपद गौण। जैसे- रातोंरात = रात ही रात में। यथाविधि = विधि के अनुसार।
2. **तत्पुरुष समासः** इसमें उत्तरपद प्रधान होता है और पूर्वपद गौण। इसमें कारक विभक्तियों का लोप होता है। विग्रह करने पर विभक्ति प्रकट हो जाती है। जैसे - ग्रामगत = ग्राम को गत (गया), गंगाजल = गंगा का जल।
3. **द्वंद्व समासः** इस समास में दोनों पद प्रधान होते हैं तथा दोनों पद योजक चिह्न से जुड़े होते हैं। विग्रह करने पर 'और' 'या' लगता है। जैसे - माता-पिता = माता और पिता, आना-जाना = आना और जाना।
4. **द्विगु समासः** द्विगु समास विद्यार्थियों की समझ में जल्दी आ जाता है। इसकी पहचान यह होती है कि इसमें पहला पद (पूर्वपद) संख्यावाची होता है। जैसे - त्रिलोक = तीन लोक, नवरात्र = नौ रात्रियों का समूह।
5. **बहुव्रीहि समासः** इसमें कोई पद प्रधान नहीं होता अपितु समस्त पद के अर्थ के अतिरिक्त कोई अन्य अर्थ (सांकेतिक) प्रधान होता है। जैसे - नीलकंठ = नीला है कंठ जिसका अर्थात् शिव। गजानन = गज जैसा आनन है जिसका अर्थात् गणेश।
6. **कर्मधारय समासः** इसमें उत्तरपद प्रधान होता है तथा पूर्वपद और उत्तरपद में विशेषण-विशेष्य, उपमान-उपमेय का संबंध होता है। जैसे - सज्जन = सत् जन (अच्छा आदमी), पीतांबर = पीला अंबर।

   विशेषः कुछ समस्त पदों में कर्मधारय और बहुव्रीहि दोनों समास बनते हैं। ऐसे में विग्रह के अनुसार ही समास की पहचान होती है।

अशुद्धि शोधन

व्याकरण की दृष्टि से वर्तनी, वाक्य की शुद्धता, स्पष्टता और सार्थकता ही भाषा को परिष्कृत करती है। 'वाक्य' भाषा की महत्वपूर्ण इकाई है। अतः व्याकरणिक नियमों के अनुरूप शुद्ध करना ही अशुद्धि शोधन कहा जाता है। वाक्यों में लिंग, वचन, विभक्ति, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, तथा क्रिया, पदक्रम व पुनरावृत्ति दोष, विराम चिह्न, कारक मुहावरों के उपयोग और स्थानीय बोली-भाषा आदि संबंधी अशुद्धियाँ पाई जाती हैं।

जैसेः क्रिया संबंधी अशुद्धि-राम और सीता वन को **गई**/ (गए)। वचन संबंधी अशुद्धि-उसने **अनेकों** ग्रंथ लिखे / (अनेक)। कारक संबंधी अशुद्धि-मैं पुस्तक **की** पढ़ता हूँ। / (को)।

किसी **और** लड़के को बुलाओ/ (दूसरे) पदक्रम संबंधी अशुद्धि- खाता वह सुबह-शाम है। (वह खाता ....)। पुनरावृत्ति दोष/अशुद्धि - सहवाग ने गगनचुंबी आसमान को छूता हुआ छक्का लगाया। (गगनचुंबी छक्का लगाया।)

स्थानीय बोली-भाषा संबंधी अशुद्धि - रामू ने जो करा, गलत करा। (....... जो किया, गलत किया।)

मुहावरे

मुहावरे हिंदी भाषा के श्रृंगार की तरह हैं। मुहावरे हिंदी भाषा तथा हमारी बोलचाल की भाषा में इस तरह रच-बस गए हैं कि इनके बिना ये अधूरी लगती है। मुहावरे का अर्थ है- कोई वाक्यांश जो अपने शाब्दिक/साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ व्यक्त करता है तो मुहावरा कहलाता है। जैसे - ईंट का जवाब पत्थर से देना- मुँहतोड़ जवाब देना, करारा जवाब देना। अब इसका अर्थ यह तो नहीं है कि कोई हमें ईंट मारे तो हम पत्थर मारें। आँख चुराना (छिपना)- इसका अर्थ छिपते हुए घूमना है, न कि किसी की आँखें चुरा लेना।

DISHA™ Publication Inc

रचनात्मक लेखन

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद अर्थात् पैराग्राफ। यह निबंध, पाठ या किसी लेखन का विशिष्ट अंश होता है। आजकल परीक्षाओं में स्वतंत्र रूप से अनुच्छेद लेखन भी करवाया जाता है। इसमें 'गागर में सागर' विधि को अपनाते हुए लेखन करना चाहिए। चुनिंदा शब्द, स्पष्ट शैली, सरल भाषा, शुद्ध वाक्य तथा स्वतंत्र और प्रवाहमयी शैली में अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

अनुच्छेद लेखन से पहले दिए गए विषय पर अपने अर्जित ज्ञान और अनुभवी ज्ञान को मिलाकर सशक्त भाषा में चिंतन कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् चिंतन-मनन और लेखन होना चाहिए। अनुच्छेद लेखन में क्रमबद्धता का विशेष महत्व होता है। विषय के अतिरिक्त अनावश्यक बातों का उल्लेख नहीं होना चाहिए। अनुच्छेद लेखन में मुहावरे, कहावतों, लोकोक्तियों का प्रयोग उसे सुंदर बना देता है। बिखराव नहीं होना चाहिए। शुद्धता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए।

अनौपचारिक पत्र

वर्तमान युग में संचार माध्यमों में क्रांति हुई है। दूर-संचार के साधनों के कारण पत्र का महत्व कम अवश्य हुआ है, परंतु खत्म नहीं हुआ है। अनौपचारिक पत्र अपने सगे संबंधियों, रिश्तेदारों को लिखे जाते हैं। पत्र के माध्यम से हम अपने विचार, चिंतन, अनुभूति, संवेदना, पारिवारिक समाचार आदि की अभिव्यक्ति करते हैं।

प्रभावशाली पत्र-लेखन एक कला है। प्रभावी शैली उद्देश्य पूर्ति के साथ-साथ दूसरों को प्रभावित भी करती है। पत्र की विषय-वस्तु, लेखन शैली और भाषा लेखक की योग्यता पर निर्भर करती है।

अनौपचारिक पत्र के अंग:

- पता और दिनांक
- संबोधन
- अभिवादन
- पत्र की सामग्री / विषय-वस्तु
- पत्र की समाप्ति
- स्वनिर्देश / संबंध-शब्द
- हस्ताक्षर / नाम

पता

....

....

दिनांक ....

पूज्य/प्रिय, ...

नमस्ते, स्नेह।

....

....

....

आपका पुत्र / मित्र

....

DISHA™ Publication Inc

सूचना लेखन

सूचना लेखन में विशेष जानकारी दी जाती है। जैसे - खोना-पाना, परीक्षा तिथि, कार्यक्रम संबंधी बैठक, खेल प्रतियोगिता, अन्य प्रतियोगिता, कार्यालयी सूचना आदि। सूचना कम से कम व आकर्षक शब्दों में लिखी जानी चाहिए। वाक्य सरल व संक्षिप्त तथा लिखाई शुद्ध, स्पष्ट व स्वच्छ होनी चाहिए। सूचना में समय और तिथि स्पष्ट हो तथा स्थान और पते की जानकारी स्पष्ट लिखी जानी चाहिए।

प्रारूप-

शीर्षक (सूचना)

विषय ....

सूचना का लेखन (विषय-वस्तु)

....

....

....

दिनांक ....

सूचना देने वाले का पद, नाम, पता आदि।

संवाद लेखन

हम प्रतिदिन अनेक लोगों से बातचीत करते हैं, उसे ही संवाद कहते हैं।

किसी विषय, समस्या, उत्सव, कार्यक्रम आदि के विषय में दो व्यक्तियों के मध्य होने वाले वार्तालाप को संवाद कहा जाता है। संवाद का साहित्यिक विधाओं (नाटक, एकांकी, उपन्यास आदि) में विशेष महत्व है।

- संवादों का रोचक होना अनिवार्य है।
- संवाद पात्रों के अनुकूल होना चाहिए।
- संवाद विषय के अनुकूल होना चाहिए।
- संवाद की भाषा सरल और संक्षिप्त होनी चाहिए।
- संवाद प्रभावी होना चाहिए।
- संवाद लेखन में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग करना चाहिए।
- संवाद का आरंभ और अंत आकर्षक होना चाहिए।
- संवाद स्वाभाविक तथा सजीव होना चाहिए।
- संवाद में अनुतान और बलाघात का उचित उपयोग होना चाहिए।

विज्ञापन लेखन

'विज्ञापन' का अर्थ होता है- विशेष सूचना। 'वि' का अर्थ है- विशेष और 'ज्ञापन' का अर्थ है सूचना। विज्ञापन के माध्यम से हम अपनी किसी वस्तु या उत्पाद का प्रचार-प्रसार करते हैं। विज्ञापन से ग्राहकों को अपनी तरफ किया जा सकता है। इसे उपभोक्तावाद कहते हैं। विज्ञापन की विशेषता यह होनी चाहिए कि वह जिसके लिए हो सीधे उसके दिल में उतर जाना चाहिए। विज्ञापन में प्रामाणिकता तथ्यों एवं आंकड़ों की सहायता से प्रस्तुत की जानी चाहिए। विज्ञापन ऐसा हो कि सुनने वाले को ऐसा लगे कि यह सिर्फ उसके लिए ही है। वह ग्राहक को मज़बूर कर दे वस्तु खरीदने के लिए।

DISHA™ Publication Inc

- विज्ञापन प्रसंगानुकूल होनी चाहिए। जैसे – क्रिकेट मैच के दौरान क्रिकेटर से संबंधित विज्ञापन आए तो ज्यादा प्रभावी रहता है।
- विज्ञापन से जिज्ञासा उत्पन्न होनी चाहिए।
- वस्तु क्यों खरीदें? अर्थात गुणों का बखान होना चाहिए। स्लोगन या नारा अवश्य सम्मिलित करें।
- शीर्षक आकर्षक, सरल, संक्षिप्त, प्रेरणास्पद व असरदार होना चाहिए।
- वस्तु का नाम कई बार लिया जाना चाहिए।
- चित्रों का प्रयोग व आकर्षक लिखावट हो, नयापन हो। इसे बॉक्स में लिखा जाना चाहिए।

साहित्य

गद्य खण्ड

हिन्दी साहित्य में गद्य में अनेक विधाएँ हैं। गद्य समृद्ध साहित्य है। कहानियाँ हमारे बचपन से हमारे साथ जुड़ी हैं। इस पुस्तक में जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती हुई कई कहानियाँ हैं। यह देश के लगभग प्रत्येक क्षेत्र की भावनाओं को समेटने का समग्र प्रयास है। गद्य की यह विशेषता होती है कि लेखक अपने मनोभावों को सहज-सरल भाषा में लिख सकता है।

प्रेमचंदः बड़े भाई साहब

प्रस्तुत पाठ में मुंशी प्रेमचंद जी ने अपने बड़े भाई के माध्यम से उन विद्यार्थियों पर व्यंग्य किया है, जो पूरे दिन किताब हाथ में लिए रहते हैं और पढ़ने का दिखावा करते हैं, खेल को तुच्छ समझते हैं। लेखक समझाना चाहता है कि तनाव रहित दिमाग रखें, खेलने के समय खेल में और पढ़ने के समय पूरा ध्यान पढ़ाई में लगाएँ।

लेखक के भाई साहब उनसे पाँच साल बड़े थे। अथक परिश्रम के बाद भी वे फेल हो जाते थे। लेखक कम पढ़कर भी पास हो जाता था। लेखक का ध्यान खेल में ज्यादा रहता था, इस कारण उन्हें बड़े भाई साहब का कोपभाजन बनना पड़ता था। बड़े भाई साहब उन्हें अंग्रेजी की जटिलता समझाते हुए बताते थे कि अंग्रेजी सीखने के लिए जी-तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। मैं दिन-रात मेहनत करके भी फेल हो जाता हूँ। तुम तो पढ़ाई को खेल समझ रहे हो, क्यों दादा की गाढ़ी कमाई खराब कर रहे हो, घर चले जाओ।

ऐसी जली-कटी सुनकर लेखक परेशान हो जाता था परंतु गिल्ली डंडा, पतंगबाजी और क्रिकेट का मोह नहीं छोड़ पाता था। फिर जब सालाना इम्तिहान का परिणाम आया तो लेखक और भाई साहब के दरजे में अंतर कम होता चला गया। भाई साहब का आतंक कुछ कम हुआ, लेखक का आत्मविश्वास भी बढ़ता गया। भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और लेखक पर टूट पड़े और बोले भाईजान घमंड तो रावण का भी नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है। इम्तिहान पास कर लेना अलग बात है, असल चीज है बुद्धि का विकास। अभिमान करने वाला दीन और दुनिया दोनों से जाता है। तुमने तो केवल एक दरजा पास किया है और सिर फिर गया। मेरे दरजे में आओगे तो अंग्रेजों का इतिहास पढ़ना पड़ेगा तो दिमाग चकराने लगेगा और ज्यामेट्री में अ ब ज की जगह अ ज ब लिख दिया तो सारे नंबर कट जाएँगे। भाई साहब की उपदेश-माला समाप्त होने का नाम नहीं ले रही थी। लेखक को ताज्जुब था कि पास होने पर ऐसा स्वागत है तो फेल होने पर क्या हाल होता।

फिर सालाना इम्तिहान हुआ और संयोग से बड़े भाई साहब फेल और लेखक पास हो गया। भाई साहब रो पड़े थे। अब वे कुछ नरम पड़ गए थे। लेखक बाज़ार में कनकौए लूटता फिरता था। एक दिन बड़े भाई साहब से मुठभेड़ हो गई। फिर बड़े भाई साहब ने जो कहा उसे सुनकर लेखक बड़े भाई साहब के आगे नतमस्तक हो गया। बड़े भाई साहब ने कहा चाहे तुम पढ़ाई में मुझसे आगे भी निकल जाओगे, तो भी मैं तुमसे बड़ा रहूँगा। बड़े होने का अर्थ है- जिम्मेदारी। मुझे कुछ होने पर तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएंगे। परंतु दादा स्वयं इलाज करेंगे या डॉक्टर को दिखाएँगे। वे आधे पैसों में पूरा घर चलाते हैं, और आधे में हम दो रहते हैं। मेरा भी मन करता है कि खेलूँ, परंतु यदि मैं स्वयं ऐसा करूँगा तो तुम्हें सीख कैसे दे पाऊँगा। तभी एक कनकौआ लेकर भाई साहब हॉस्टल की तरफ दौड़ पड़े। लेखक के मन में आज भाई के लिए प्यार और श्रद्धा थी।

सीताराम सेकसरिया: डायरी का एक पन्ना

सीताराम सेकसरिया ने महात्मा गांधी के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया। वे गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस के करीबी रहे। सत्याग्रह आंदोलन के दौरान वे जेल भी गए। प्रस्तुत पाठ में उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के एक दिन की डायरी लिखी है। 26 जनवरी, सन् 1931 के दिन कोलकाता का नजारा अद्भुत था। दूसरा स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा था। नेताजी के आह्वान पर हजारों लोग (औरतें, बच्चे, बड़े) सड़कों पर मोनुमेंट पर झंडा फहराने निकल पड़े। मोनुमेंट के नीचे सभा होने वाली थी। शाम की सभा के लिए पुलिस ने सुबह छह बजे से ही शहर को छावनी में बदल दिया।

श्रद्धानंद पार्क में प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा तो पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। तारा सुंदरी पार्क में बड़ा बाजार कांग्रेस कमेटी के युद्ध मंत्री हरिश्चंद्र सिंह झंडा फहराने गए पर वे भीतर न जा सके। पुलिस की लाठियों से कइयों के सिर फट गए। लड़कियों-औरतों को गिरफ्तार कर लिया गया। मारवाड़ी बालिका विद्यालय में झंडोत्सव मनाया गया। जानकी देवी, मदालसा ने लड़कियों को इस उत्सव का महत्व समझाया।

जगह-जगह स्त्रियाँ जुलुस निकाल रही थीं। सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था। पूर्णोदास की गिरफ्तारी के बाद औरतों ने जुलूस की जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर ले लीं। कोलकाता के माथे से ये कलंक काफी हद तक धुल गया कि यहाँ काम नहीं हो रहा है। विमल, प्रतिभा, वृजलाल गोयनका जैसे सैकड़ों कार्यकर्ता घायल हुए और आगे बढ़ते रहे। इस घटना ने अंग्रेजों की नींद उड़ा दी थी।

लीलाधर मंडलोई: तताँरा-वामीरो कथा

लीलाधर मंडलोई की कविताओं में छत्तीसगढ़ के अंचल की मिठास और आम जन-जीवन का चित्रण है। प्रस्तुत पाठ अंडमान-निकोबार द्वीपसमूह की लोककथा पर आधारित है। प्रेम सबको जोड़ता है, परंतु एक प्रेमी के टूटे हुए दिल ने द्वीप के भी दो टुकड़े कर दिए।

अंडमान द्वीपसमूह का अंतिम दक्षिणी द्वीप लिटिल अंडमान है। यह निकोबार से 96 कि.मी. दूर है। निकोबारियों को विश्वास है कि प्राचीन काल में ये दोनों द्वीप एक ही थे। एक प्रेमी के टूटे हुए दिल ने इन द्वीपों के दो टुकड़े कर दिए।

एक सुंदर से गाँव में ततँारा नामक सजीला शक्तिशाली युवक रहता था। सभी निकोबारी उससे प्रेम करते थे। वह अपनी कमर में एक लकड़ी की तलवार बाँधे रहता था। लोगों को लगता था कि वह चमत्कारी तलवार थी। एक दिन समुद्र किनारे उसे मधुर संगीत सुनाई दिया। वह वामीरो थी। दोनों एक-दूसरे के आकर्षण में बंधे घंटों एक-दूसरे को देखते रहते। आत्मीय प्रेम में खोए रहते। निकोबारी परंपरा के अनुसार कोई भी लड़की गाँव के बाहर शादी नहीं कर सकती थी, ये अपराध था। ततँारा घंटों उसका इंतजार करता, फिर मौन मिलन होता।

एक दिन ततँारा के गाँव में उत्सव था। वामीरो के गाँव के युवकों ने इस मूक प्रेम को भाँप लिया और फिर वही दीवार आ खड़ी हुई। वामीरो लपाती ग्राम की थी और ततँारा पासा का। दोनों का मिलन संभव न था। वामीरो ततँारा को रीति-रिवाज़ का डर दिखाकर समझाने का प्रयास किया गया, किंतु दोनों अपने प्रेम पर अडिग रहे।

पासा के पशु-पर्व में वामीरो ततँारा के पास आई और रोने लगी। उसका रोना सुनकर उसकी माँ भी आ पहुँची। उन दोनों को देखकर आग-बबूला हो गई। ततँारा का अपमान किया। ततँारा वामीरो का क्रंदन और अपना अपमान देखकर क्रोधित हो उठा। उसका हाथ अनायास अपनी तलवार पर जा टिका। तलवार धरती में घोंपकर अपनी तरफ खींचते हुए दूर तक पहुँच गया। जहाँ तक लकीर खिचीं थी वहाँ एक दरार होने लगी। मानो धरती दो टुकड़ों में बँट गई। वह दूसरी तरफ चला गया और वामीरो दूसरी तरफ दौड़ रही थी। ततँारा जमीन के टुकड़े के साथ समुद्र में डूब रहा था। दूसरी तरफ लहूलुहान ततँारा और इस तरफ वामीरो एक-दूसरे को पुकार रहे थे। बाद में किसी को नहीं पता कि तातँारा और वामीरो का क्या हुआ। उनकी प्रेम कहानी तो अधूरी रह गई, परंतु मानते हैं कि अब दूसरे गाँव में भी संबंध होते हैं। दो प्रेमियों की त्यागमयी मृत्यु का यही सुखद परिणाम और परिवर्तन था।

प्रहलाद अग्रवाल: तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

प्रहलाद जी को बचपन से ही फ़िल्मी इतिहास पर चर्चा करने और जानने का शौक रहा है। वे फ़िल्म जगत से जुड़े लोगों पर बहुत कुछ लिख चुके हैं। प्रस्तुत पाठ फ़िल्म – तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र जी को समर्पित है। कभी-कभी कोई फ़िल्म ऐसी आती है जो दशकों तक याद रहती है। 'तीसरी कसम' साहित्य की अति मार्मिक कृति है, जिसे सैल्यूलाइड पर पूरी सार्थकता के साथ उतारा गया है। यह फ़िल्म नहीं बल्कि सैल्यूलाइड पर लिखी गई कविता है। 'तीसरी कसम' शैलेंद्र के जीवन की पहली और अंतिम फ़िल्म है। इसे 'राष्ट्रपति स्वर्णपदक' मिला तथा बंगाल फ़िल्म जर्नलिस्ट एसोसिएशन द्वारा सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

यह एक ऐसी फ़िल्म थी जिसे केवल कवि हृदय ही बना सकता है। इस फ़िल्म से आर्थिक लाभ की उम्मीद नहीं थी। शैलेंद्र ने राजकपूर की भावनाओं को शब्द दिए हैं और राजकपूर जी ने शैलेंद्र के शब्दों को परदे पर साकार किया। दोनों दोस्तों की दोस्ती की गवाह बनी ये फ़िल्म। राजकपूर जी ने बिना पारिश्रमिक लिए ये फ़िल्म की। 'तीसरी कसम' फ़िल्म कितनी भी महान फ़िल्म क्यों न रही हो, परंतु ये कब आई और कब चली गई, पता ही नहीं चला। यह एकमात्र ऐसी फ़िल्म थी जिसने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया। शैलेंद्र ने इतने बड़े स्टार को हीरामन बना दिया। हीरामन में राजकपूर कहीं खो गया था। छींट की साड़ी में लिपटी हीराबाई से जब हीरामन ने पूछा – "मन समझती हैं आप?" तब हीराबाई जुबान से नहीं, आँखों से बोलती है। दुनिया की सारी भाषाएँ उस अभिव्यक्ति को नहीं छू सकती। अपनी मस्ती में डूबकर झूमते गाते गाड़ीवान- "चलत मुसाफिर मोह लियो रे पिंजड़े वाली मुनिया।" टप्पर-गाड़ी में हीराबाई को जाते हुए देखकर उनके पीछे दौड़ते-गाते बच्चों का हुजूम 'लाली-लाली डोलिया में लाली रे दुलहनियाँ' नौटंकी की बाई और गाड़ीवान का अपनापन अभावों की जिंदगी जीते लोगों के सपनीले कहकहे।

शैलेंद्र-मुकेश का गीत- "सजनवा बैरी हो गए हमार चिठिया हो तो हर कोई बाँचै भाग न बाँचै कोय"....अद्वितीय हो गया है। इस फ़िल्म में राजकपूर की मासूमियत अपने चरम पर थी। इसमें राजकपूर 'हीरामन' के साथ एकाकार हो गया। इतना बड़ा शोमैन 'हीरामन' के व्यक्तित्व में ढल गया।

'तीसरी कसम' की पटकथा स्वयं इस कहानी के लेखक फणीश्वरनाथ रेणु ने तैयार की थी। कहानी की छोटी-छोटी बारीकियों पर पूरा ध्यान दिया गया। एक-एक भावना साक्षात् परदे पर उतर आई।

DISHA™ Publication Inc

अंतोन चेखव: गिरगिट

अंतोन चेखव रूसी लेखक हैं। वे विद्यार्थी काल से ही लिखने लगे थे। 19वीं सदी में रूस में शासन की दमनकारी नीति थी। ऐसे समय में मौकापरस्त लोगों को बेनकाब करती कहानियाँ लिखना साहस का काम है।

प्रस्तुत पाठ में चेखव ने एक ऐसे शासन का वर्णन किया है, जो चापलूसों और भाई-भतीजावाद के पोषक भ्रष्ट अधिकारियों के सहारे चल रहा हो। ऐसे चापलूस जो आम आदमी की अपेक्षा एक अफ़सर के कुत्ता को ज़्यादा महत्व देते हैं। दोषी होने पर भी कुत्ते को गोद में उठाकर सिपाही अफ़सर के घर पर ले जाता है और पीड़ित आम जन को डाँटता है।

बंडल थामे हुए इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव अपना लंबा ओवरकोट पहने बाज़ार के चौराहे से जा रहा था। बाज़ार से जब्त की गई झरबेरियाँ उठाए एक सिपाही भी पीछे चल रहा था। तभी कुत्ते पर चिल्लाता ख्यूक्रिन सुनार गली में दौड़ता आया। उसने इंस्पेक्टर से कुत्ते के मालिक से हरज़ाना दिलवाने की गुज़ारिश की। ओचुमेलॉव उसके मालिक को सबक सिखाने की बात करता है, क्योंकि उस कुत्ते ने ख्यूक्रिन की उँगली काट ली है। जैसे ही इंस्पेक्टर को पता चलता है कि यह कुत्ता जनरल साहब का है तो वह पलट जाता है और उलटे ख्यूक्रिन को अपराधी बना देता है। वह कहता है कि तुम्हारी उँगली में कील लगी होगी। तुमने मासूम जानवर को सिगरेट से मुँह पर दागा है।

फिर किसी ने कहा कि यह जनरल का कुत्ता नहीं है, यह तो आवारा किस्म का है। जनरल को बारजोई नस्ल पसंद नहीं है तो तुरंत पलटी मारते हुए कहता है कि यह भद्दा और मरियल-सा पिल्ला आवारा होगा। पीटर्सबर्ग में ऐसे कुत्ते की छुट्टी कर दी जाती है। जनरल साहब के तो सभी कुत्ते पोंटर हैं। महँगे और अच्छी नस्ल के हैं। इस कुत्ते को हर हाल में मज़ा चखवाया जाना जरूरी है।

तभी भीड़ से कोई कहता है कि यह कुत्ता जनरल साहब का ही है तो इंस्पेक्टर सिपाही से कहता है कि जल्दी से इस कुत्ते को जनरल साहब के पास ले जाओ और कहना कि मैंने भेजा है। यह भी कहना कि इस महँगे प्राणी को गली में आने से रोके, कोई उठा ले जाएगा। तभी जनरल का बावर्ची उधर आता है। उसने बताया कि यह जनरल का नहीं उनके भाई का है, तो ओचुमेलॉव हैरानी से पूछता है- क्या जनरल के भाई साहब बाल्दीमीर इवानिच पधार चुके हैं और मुझे मालूम तक नहीं। अभी कुछ दिन रुकेंगे? बावर्ची को कहा- इसे (कुत्ते को) ले जाओ, भाई बड़ा प्यारा पिल्ला है, और काठगोदाम से बाहर चला गया। भीड़ ख्यूक्रिन की हालत पर हँस दी कि इंसान की औकात कुत्ते से भी कम है।

इस पाठ में इंस्पेक्टर ओचुमेलॉव का पल-पल बदलता रूप दिखाया गया है। किस प्रकार वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है।

निदां फ़ाज़ली: अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले

निदा फ़ाज़ली जी अपनी किस्म के इकलौते गद्यकार हैं। वे गद्य में पद्य के मनकों की शेर-ओ-शायरी पिरोकर अपनी सुंदर भाषा गढ़ते हैं। प्रस्तुत पाठ में लेखक की मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी संवेदना उभरकर आई है। यह धरती ईश्वर ने सभी प्राणियों के लिए बनाई थी, परंतु इंसान ने अपने बुद्धिबल से सब जीवों का हक छीनकर सारी पृथ्वी को टुकड़ों में बाँट लिया है। लेखक चाहता है कि उसकी कहानियों को पढ़कर लोग दूसरों के दुख को समझें और मदद करें।

बाइबिल के सोलोमेन और कुरान के सुलेमान बहुत ही दयालु राजा थे। वे जानवरों की भाषा जानते थे। एक बार चीटियाँ उनके काफ़िले से डरकर बात कर रही थीं तो सुलेमान ने कहा- घबराओ मत! खुदा ने सुलेमान को सबका रखवाला बनाया है। चींटियों ने सुलेमान को दुआएँ दीं।

एक ऐसी कहानी का वर्णन शेख अयाज़ ने किया है। उनके पिता जी एक दिन जब कुएँ से लौटे तो एक काला च्योंटा रेंग रहा था। वह भोजन छोड़कर उसे दोबारा कुएँ पर छोड़ने गए। नूह नाम के एक पैगंबर सारी उम्र रोते रहे, एक जख्मी कुत्ते के कारण। महाभारत में युधिष्ठिर का अंत तक साथ निभानेवाला भी एक प्रतीकात्मक कुत्ता ही था।

दुनिया किसी एक की नहीं थी, सब मिलजुलकर रहते थे। अब इंसानों ने दीवारे बनाकर रहने के डिब्बे बना लिए। पशु-पक्षी जानवरों के बसेरे काट दिए। समुद्र को पीछे हटने पर मजबूर कर दिया। प्रकृति की सहनशक्ति की सीमा जब समाप्त होती है, तो वह अपना विकराल रूप दिखाती है। कुछ साल पहले बंबई में देखने को मिला था। समुद्र को धकेलते हुए जब इंसान ने उसे मज़बूर किया तो उसने अपनी लहरों पर दौड़ते हुए तीन जहाज़ों को तिनकों की तरह तीन दिशाओं में फेंक दिया- एक वर्ली में, दूसरा बांद्रा में और तीसरा गेट-वे-ऑफ़ इंडिया पर।

लेखक की माँ सूरज ढलने के बाद पत्ते तोड़ने से मना करती थी। मुर्गे और कबूतर को सताने से मना करती थी। एक बार माँ से कबूतर का अंडा टूट गया था, तो उन्होंने पूरे दिन रोज़ा रखा था और कई-कई बार नमाज़ अदा की थी।

इतने सालों बाद अब फिर मेरे घर में कबूतर ने घोंसला बनाया है। अब मेरी माँ नहीं, पत्नी है। उन्होंने जाली लगाकर कबूतरों का आना बंद कर दिया है। अब उदास कबूतर खिड़की के बाहर बैठे रहते हैं, क्योंकि अब न सोलोमन हैं, न नूह और न लेखक की माँ है जो इनके दुखों में सारी रात नमाज़ पढ़ें।

रवींद्र केलेकर: पतझर में टूटी पत्तियाँ

(1) गिन्नी का सोना

रवींद्र केलेकर गांधीवादी चिंतक हैं। इनकी रचनाओं में 'गागर में सागर' फिट बैठता है। इनकी रचनाएँ समाज के ताने-बाने से निकलकर आती हैं। प्रस्तुत पाठ में लेखक पाठक को सक्रिय और जागरूक बनने की प्रेरणा देता है। लेखक आदर्श और व्यावहारिकता पर चर्चा करते हुए कहता है कि गिन्नी सोने का बहुत प्रचलित रूप है। इसमें तांबा मिला होता है। यह मिलावट उसका खोट नहीं, व्यावहारिकता है। ताँबे से सोने में चमक और मजबूती दोनों आती है।

इसी प्रकार व्यावहारिकता को ही आदर्श बना लेने से लोग 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' बन जाते हैं। गाँधी जी सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर ताँबे (व्यवहार) की कीमत बढ़ा देते थे। इसलिए सोना ही आगे रहता था।

व्यवहारवादी लोग हमेशा अपने व्यवहार के प्रति सजग होते हैं। वे लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम बढ़ाते हैं। अपने साथ-साथ दूसरों को भी ऊपर चढ़ाते हैं, यह कार्य आदर्शवादी लोगों ने किया है। समाज के पास जो भी शाश्वत जीवन मूल्य हैं, वे आदर्शवादी लोगों के दिए हुए ही हैं। व्यवहारवादी समाज को गिराते हैं, आदर्शवादी आगे बढ़ाते हैं। व्यवहारवादी अपना लाभ ढूँढ़ता है, तो आदर्शवादी समाज की उन्नति चाहता है।

(2) झेन की देन

सारा विश्व जानता है कि दूसरे विश्व युद्ध में जापान के दो शहरों के सर्वनाश के साथ उसकी अर्थव्यवस्था की भी कमर टूट गई थी। उसके बाद जिस तरह विश्व पटल पर जापान उभरकर आया, यह एक चमत्कार ही है। यह चमत्कार हुआ वहाँ के लोगों के अथक प्रयास और देश के प्रति समर्पण से। एक महीने का काम एक दिन में ही पूरा करने लगे। जापान के लोगों के जीवन की रफ़्तार बढ़ गई। उनका जीवन दौड़ने लगा। अमेरिका से प्रतिस्पर्धा करते-करते जापान में 'मानसिक' रोगी बढ़ने लगे हैं।

इसलिए जापानी अपने दिमाग को शांत करने के लिए चा-नो-यू (टी-सेरेमनी) करते हैं। यह चाय पीने की एक विधि है। लेखक जब जापान गया तो उसका एक मित्र इसमें ले गया। छह मंजिली छत पर दफ़्ती की दीवारों वाली और तातामी (चटाई) की जमीन वाले एक सुंदर पर्णकुटी थी। मिट्टी के बरतन में रखे पानी में हाथ-पैर धोकर वे अंदर बैठ गए। 'चाजीन' ने स्वागत किया, अंगीठी सुलगाई, फिर चायदानी रखी। बरतनों को तौलिए से साफ किया। सभी क्रियाएँ लयबद्ध हो रही थीं। वहाँ इतनी शांति थी कि पानी के उबलने और सन्नाटे तक की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

इस विधि में शांति को ध्यान में रखते हुए तीन से ज्यादा लोगों को एक साथ इजाजत नहीं होती। दो घूँट चाय की चुस्कियाँ बूँद-बूँद करके डेढ़ घंटे में पीने से दिमाग असीम शांति में पहुँच गया। पहले मन भूत-भविष्य में घूमते हुए अंत में वर्तमान की अनंतकाल की शांति में खो गया। जीना किसे कहते हैं, उस दिन लेखक ने जाना। झेन परंपरा की यह बहुत बड़ी देन जापानियों के पास है।

उन्नति के चक्कर में हम मशीन बनते जा रहे हैं। अपने मन की शांति को बेचकर हमने भौतिक सुख-साधन जुटा लिए; परंतु फिर भी खुश नहीं हैं। एक पल शांति के लिए दिन-रात तड़प रहे हैं। वास्तविक सुख मन की शांति में हैं।

हबीब तनवीर: कारतूस

हबीब तनवीर ने दिल्ली में पेशेवर नाट्यमंच की स्थापना की। इन्होंने लोकनाट्य के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

प्रस्तुत पाठ एक ऐसे जाँबाज़ वीर के बारे में है जिसका एकमात्र लक्ष्य अंग्रेज़ों को देश से बाहर भगाना था। वह निडर युवक मौत के मुँह में घुस गया। कंपनी की बटालियन के खेमे में घुसकर कर्नल पर ऐसा रौब जमाया कि कर्नल भी उसकी प्रशंसा किए बिना न रह सका।

सन् 1799 में गोरखपुर के जंगलों में अंग्रेज़ी फ़ौज कई महीनों से डेरा डाले हुए थी। उनका केवल एक ही लक्ष्य है 'वज़ीर अली' को पकड़ना। वज़ीर अली अवध का बेदखल नवाब है, जिसे अपनों ने ही धोखा दिया। उसके अपने रिश्तेदार ने ही अंग्रेजों के साथ मिलकर उसे अवध से बाहर भेज दिया और पेंशनभोगी बना दिया। कंपनी ने उसे तीन लाख सालाना पेंशन देकर बनारस पहुँचा दिया। कुछ महीने बाद उसे गर्वनर जनरल ने कलकत्ता तलब किया। वज़ीर अली कंपनी के वकील से पूछने गया था। वकील ने उचित उत्तर देने की अपेक्षा वज़ीर अली का अपमान किया। वज़ीर अली ने खंजर से वकील का कत्ल कर दिया और जंगलों में भाग गया। उसका इरादा नेपाल पहुँचना था ताकि वह अफ़गानिस्तान के बादशाह शाहे- ज़मा के साथ मिलकर अंग्रेज़ों से मुकाबला करे और अंग्रेज़ों को हिंदुस्तान से बाहर खदेड़ दे। अंग्रेज़ी सरकार डरी हुई थी कि यदि वज़ीर अली कामयाब हो गया तो बक्सर और प्लासी की लड़ाइयों से मिली जीत व्यर्थ चली जाएगी।

DISHA™ Publication Inc

तभी कर्नल और लेफ़्टिनेंट को दूर से धूल उड़ती दिखाई दी। शायद कोई काफिला आ रहा था। यह सीधा खेमे की तरफ ही आ रहा था। पास आने पर पता चला कि यह तो एक ही घुड़सवार था। उसने कर्नल से अकेले में मिलने की इच्छा जाहिर की। कर्नल से यहाँ खेमा डालने का कारण पूछा और वज़ीर अली को पकड़वाने के बदले कारतूस की माँग की। कर्नल ने दस कारतूस दे दिए और उसका नाम पूछा। उसने अपना नाम वज़ीर अली बताया और निडरतापूर्वक वहाँ से चला गया। लेफ़्टिनेंट ने जब कर्नल से पूछा कि कौन था तो उसने कहा एक जाँबाज़ सिपाई था।

भारत माँ के वीर लाड़लों ने देश को आज़ाद कराने के लिए जंगलों की खाक छानी अनेक कष्ट सहे। ऐसे उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है।

पूरक पाठ्यपुस्तक

संचयन

प्रस्तुत पुस्तक में गद्य की विभिन्न विधाओं को लिया गया है। कहानी (हरिहर काका), आत्म-कथा (सपनों के-से दिन), उपन्यास (टोपी शुक्ला) के माध्यम से विधाओं की शैलीगत विशेषताओं से विद्यार्थियों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है। साथ ही परिवार, समाज, संस्कृति और प्रकृति के महत्त्व को समझाने का भी प्रयास है।

मिथिलेश्वरः हरिहर काका

थक-हारकर मनुष्य अपने घर आकर बड़ा सुकून महसूस करता है। घर-परिवार में हम अपनों के साथ सुख-दुख, हारी-बीमारी बाँटते हैं। संकट-खुशी में एक-दूसरे का साथ निभाते हैं। धर्म और धर्मस्थान हमारे संस्कारों-विश्वासों को जोड़ते हैं, बढ़ाते हैं। परंतु यदि यही दोनों (घर-धर्मस्थान) अपनी मूल भावना से भटककर मानव को कष्ट देने लगे तो उसको कौन सहारा देगा।

आजकल लोगों की आस्था को भड़काकर या उसका गलत फ़ायदा उठाकर धर्मस्थान और धर्मध्वजाधारक अपनी महत्वाकांक्षा को पूरी करते हैं। ये स्वार्थलोलुप हो गए हैं। धर्मस्थान ताकत और धन का केंद्र बन गए हैं। बड़े-बड़े राजनेता भी अपना हित साधने के लिए इन्हें बढ़ावा देते हैं। पीड़ित-दुखी व्यक्ति का भगवान और इंसान सब पर से विश्वास उठ जाता है।

हरिहर काका का परिवार उनकी उपेक्षा करता है। अविवाहित होने के कारण भाई उनकी संपत्ति पर तो गिद्ध दृष्टि रखते हैं; परंतु उनकी उचित देखभाल नहीं करते। घर में मेहमानों के लिए तो पकवान बनते हैं; परंतु उन्हें रुखी-सूखी रोटी भी समय पर नहीं मिलती। उनके भाई भी बीमारी तक में उनका हाल नहीं पूछते। अपनी उपेक्षा से खिन्न जब हरिहर काका भाई की पत्नी को खरी-खोटी सुना रहे थे तो 'ठाकुरबारी' का पुजारी वहीं दालान में था। ठाकुरबारी का काम लोगों के अंदर भक्ति-भावना जगाना और भटके हुए लोगों को धर्म के रास्ते पर लाना है। लोग ठाकुर जी के नाम पर अनाज-पैसा निकालते हैं। ठाकुरबारी के पुजारी ने सारी बात महंत जी को बताई। महंत जी ने अपना स्वार्थ साधने के लिए हरिहर काका की आहत भावनाओं को भड़काकर उसे अपने साथ ले गए। उसे बढ़िया भोजन दिया गया और अपनी ज़मीन ठाकुरबारी को दान करने के लिए दबाव बनाया।

उधर चारों भाई भी अपने परिवारजन पर नाराज़ हुए। उन्हें भी हरिहर काका की संपत्ति अपने हाथ से फिसलती नज़र आई। दोनों तरफ संपत्ति हथियाने के लिए अनैतिक और गैरकानूनी हथकंडे अपनाए जाने लगे। इसी दौरान पता चला कि ठाकुरबारी धार्मिक संस्थान के रूप में गुंडे-निठल्ले बदमाशों का एक अड्डा बन चुकी थी। वे अपने हित के लिए हिंसक और अनैतिक कार्यों से भी परहेज नहीं करते थे। ठाकुरबारी में लठैत बदमाशों की पूरी फ़ौज थी। ठाकुरबारी की मेहरबानी से उनके भाई उसकी खूब सेवा कर रहे थे, परंतु इसी बीच महंत के गुंडों ने हरिहर का अपहरण कर लिया। हरिहर के भाइयों ने पुलिस का सहारा लिया। पुलिस ने तलाशी ली तो ठाकुरबारी

में हरिहर काका नहीं मिले। ठाकुरबारी के सब लोग भाग गए थे। तालाबंद एक कमरे में हरिहर काका बंद मिले। हरिहर काका ने बताया कि वे साधु नहीं डाकू, हत्यारे और कसाई हैं। उन्होंने सादे कागज़ पर जबरन अँगूठे के निशान ले लिए थे।

अब हरिहर काका भाइयों के साथ आ गए। दोनों तरफ खूँखार लोगों और हथियारों का जमावड़ा होने लगा था। हरिहर काका ने रिश्तेदारों के दबाव के बाद भी अपनी ज़मीन किसी के भी नाम न करने का फैसला किया। भाई धमकाते, डराते। हरिहर काका के भाइयों ने उन्हें मारा-पीटा और बाँधकर डाल दिया। इसके बाद हरिहर काका अलग रहने लगे। उनकी सुरक्षा के लिए पुलिस के चार जवान मिले। भाइयों, ठाकुरबारी और नेता जी के प्रयासों का कोई प्रभाव काका पर नहीं पड़ा। वे सारे गाँव में चर्चा का केंद्र हैं। अफवाहों का बाज़ार गर्म है। संपत्ति, वारिस, अंतिम क्रिया-कर्म को लेकर अनेक बातें होती हैं, परंतु हरिहर काका तो गूँगेपन का शिकार हो गए हैं। वे किसी बात का कोई जवाब नहीं देते। आज उनके पास कहने के लिए कुछ नहीं है। उनके धन पर पुलिस वाले भोग लगा रहे हैं।

गुरदयाल सिंहः सपनों के-से दिन

विद्यार्थी जीवन परविहीन सपनों का जीवन है। बिना पढ़े-लिखे प्रथम आने के सपने पटवारी, कलैक्टर, और न जाने क्या-क्या बन जाने के सपने। फिर हकीकत किताबें तो जैसे दुश्मनी पर उतर आती हैं। कितना भी पढ़ो याद ही नहीं होता। इस आयु में बहुत कुछ ऐसा होता है, जिसे भूला नहीं जा सकता । वे शरारतें, चुहलबाजियाँ, आकाक्षाएँ फिर कहाँ?

प्रस्तुत पाठ लेखक गुरदयाल सिंह की आत्मकथा का अंश है। इसमें लेखक ने बताया है कि उस समय खेलने के बदले माँ-बहन, पिता से कितनी मार खानी पड़ती थी। जगह-जगह पिटाई के निशान, चोट फिर भी अगले दिन खेलना नहीं भूलते थे। आखिर खेल में ऐसा क्या जादू है। यह लेखक ने उस समय जाना, जब उसने बाल मनोविज्ञान विषय पढ़ा।

लेखक के सभी साथी लेखक जैसे परिवारों से थे। जो अक्षरज्ञान तक ही शिक्षा चाहते थे। शिक्षा के प्रति कोई विशेष रूचि या लगाव न था। आधे से ज्यादातर परिवार राजस्थान या हरियाणा से आकर मंडी में व्यापार या दुकानदारी करने आए थे। हम उनकी बोली समझ नहीं पाते थे; परंतु खेल की भाषा सब अच्छी तरह समझ जाते थे। बचपन में घास अधिक हरी लगती है। फूल-पत्ते तोड़ने का लालच नहीं छोड़ पाते थे। कलियों को तोड़ते, सूँघते और जेब में डाल लेते थे। नई कक्षा का उत्साह नई किताबें देखकर जाता रहता था। गर्मी की छुट्टियों में ननिहाल जाते थे। तालाब के पानी में नहाकर गर्म रेत में लथ-पथ होते और दौड़कर फिर तालाब में छलाँग लगा देते थे। हाथ-पैर मारकर स्वयं ही तैरना सीख लेते। भैंस के सींग या दुम पकड़कर बाहर आ जाते।

जब छुट्टियाँ खत्म होने लगती तो सब मज़ा भूलने लगते और मास्टर जी याद आने लगते। गृहकार्य का हिसाब लगाते पंद्रह दिन बचने पर रोज़ के दस सवाल हल करने की सोचते तो पाँच-सात दिन और निकल जाते। डर बढ़ने लगता, दिन घटने लगते। फिर स्वयं को ढाँढस देते कि दस का क्या पंद्रह सवाल भी किए जा सकते हैं। सोचते-सोचते छुट्टियाँ भागने लगतीं। ऐसा लगता कि दोपहर में ही सूर्य छिप जाता है। दिन बहुत छोटे लगने लगते। कितने ही सहपाठी काम करने की बजाय पिटाई को 'सस्ता सौदा' समझते। लेखक जो पिटाई से बहुत डरता था, उन बहादुरों की भाँति सोचने लगता। ऐसी सोच का नेता ओमा था।

ओमा की बातें, गालियाँ, मार-पिटाई का ढंग सब-कुछ अलग था। ठिगना शरीर, हाँडी जितना बड़ा सिर, बिल्ली के बच्चे के सिर पर मानों तरबूज रखा हो। मोटी-मोटी आँखें थीं उसकी। स्कूल में सबसे ज्यादा डर पी.टी. सर की दहकती आँखों से लगता था। साल भर कठिन अनुशासन में कठिन परिश्रम के बाद उनका 'शाबाश' शब्द किसी इनाम से कम नहीं था। लेखक हेडमास्टर की मेहरबानी से ही पढ़ पा रहा था। वे एक धनाढ्य छात्र की पुरानी पुस्तकें लेखक को उपलब्ध करवाते थे। उस समय एक रुपया भी बहुत बड़ी रकम थी। पढ़ाई में अरुचि का कारण मास्टरों की मार-पीट और विषयों का समझ में न आना था। छात्रों के साथ सहयोगात्मक रवैये की अपेक्षा शासनात्मक रवैया अपनाया जाता था। स्कूल केवल स्काउट के कारण या फ़ौजी जैसी धुली ड्रैस के कारण अच्छा लगता था। स्कूलों में फ़ौजी रंगरूटों की भर्ती के लिए अंग्रेज़ आते थे। मास्टर प्रीतम चंद स्काउट के टीचर थे। वे बहुत सख्त थे। एक बार लेखक को फ़ारसी का शब्द-रूप याद करने के लिए कहा गया था। बार-बार याद करने पर भी जब याद नहीं कर पाया तो मास्टर जी ने मुर्गा बना दिया था। थोड़ी कमर

नीची होने पर डंडा पड़ता था। इतने में हेडमास्टर शर्मा भी दफ़्तर से बाहर आए और प्रीतम जी पर बिगड़ गए थे। प्रीतम जी को मुअत्तल (सस्पेंड) कर दिया था। फिर मास्टर प्रीतम जी स्कूल नहीं आए। फिर जब भी फ़ारसी का घंटा बजता तो छाती धक्-धक् करने लगती और जब तक शर्मा जी या मास्टर नौहरिया राम जी कमरे में फ़ारसी पढ़ाने नहीं आ जाते तो चेहरे मुर्झाए रहते।

वे बाज़ार में किराए पर रहते थे। मुअत्तल होने के बाद भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा था। वे बड़े आराम से रहते थे। मास्टर जी बादाम भिगोकर अपने पालतू तोतों को खिलाते थे। तोतों से मीठी-मीठी बातें करना एक चमत्कार से कम न था, क्योंकि प्रीतम जी और मिठास का दूर-दूर तक कोई रिश्ता न था।

उपर्युक्त पाठ से पता चलता है कि शारीरिक दंड से बच्चों में भय का वातावरण बनता है। अतः विद्यालयों में वातावरण सहयोगपूर्ण होना चाहिए।

राही मासूम रज़ाः टोपी शुक्ला

आज के मशीनी युग में रिश्ते-नाते स्वार्थपूर्ति के लिए ही रह गए हैं। अपनापन-प्यार खत्म होता जा रहा है। बालमन भी इस अभाव से अछूते नहीं हैं। बड़े घरों में तो हालात और भी बुरे हैं।

कहानी का पात्र टोपी को अपनापन अपने दोस्त अज़ीज इफ़्फ़न की दादी माँ और अपने घर की नौकरानी सीता में मिलता है। टोपी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि किसकी क्या जाति है, क्या धर्म है। कहा जाता है- प्रेम न माने जात-विजात, भूख न जाने खिचड़ी भात।

इफ़्फ़न के दादा-परदादा प्रसिद्ध मौलवी थे। उनकी आत्मा ने एक साँस भी इस देश में न ली। 'लाश' को भी करबला ले जाने की वसीयत की। इफ़्फ़न की परदादी और दादी नमाज़-रोज़े की पाबंद थीं, लेकिन भारतीय संस्कृति को मानती थी। इफ़्फ़न की दादी पूरबी थी। जीवन भर पूरबी बोलती रही। मर्दों और औरतों के फर्क को जानकर ही इफ़्फ़न को समझा जा सकता है। इफ़्फ़न की दादी जमींदार की बेटी थीं। ससुराल में मौलविन की आत्मा सदा परेशान रही। वह अपनी लाश न करबला, न नजफ़ में दफनवाना चाहती थी। वह तो अपने घर जाना चाहती थी, जो अब कराची में है। मरने से पहले इंसान शायद सबसे खूबसूरत सपने देखता है। अच्छे दिनों की याद करता है। इफ़्फ़न की दादी को बनारस के फातमैन में दफनाया गया था। इफ़्फ़न अपनी दादी से सबसे ज्यादा प्यार करता था। दादी रात भर उसे कहानियाँ सुनाती थी, कभी उसका दिल नहीं दुखाती थी।

टोपी को अपनी दादी से नफरत थी। दादी और अब्बा एक जैसी बोली बोलते थे। माँ की भाषा उसे मीठी लगती थी। जब भी वह इफ़्फ़न के घर जाता, दादी के पास ही बैठने की कोशिश करता था। इफ़्फ़न की दादी अम्माँ के बारे में पूछती। उसे अच्छा लगता।

डॉक्टर भृगु नारायण शुक्ला के घर मेज़-कुर्सी पर खाना होता था। टोपी ने कहा- "अम्मी ज़रा बैगन का भुरता।" भूचाल आ गया परंपराएँ डोलने लगीं। माँ ने पूछा- अम्मी लफ़्ज़ कहाँ से सीखा। "ई हम इफ़्फ़न से सीखा है"। टोपी ने कहा उस दिन रामदुलारी ने टोपी को बहुत मारा। वह मारते-मारते थक गई। परंतु टोपी ने नहीं कहा कि वह इफ़्फ़न के घर नहीं जाएगा। टोपी के पिता को पता चला कि टोपी की दोस्ती कलेक्टर के बेटे से है तो वे कपड़े और शक्कर के परमिट ले आए। इफ़्फ़न की दादी के इंतकाल की खबर सुनकर जब वह इफ़्फ़न के घर गया तो दादी के बिना घर सूना लगा था। इफ़्फ़न की दादी और टोपी दोनों ही अपनों के बीच अनजाने थे। प्यार और सम्मान के प्यासे थे। दोनों में अटूट बंधन था। उसके बाद जब इफ़्फ़न के पिता जी का तबादल हुआ तो वह टूट गया था। दस अक्टूबर सन् पैंतालीस का टोपी के आत्म-इतिहास में बहुत महत्त्व था। उस दिन इफ़्फ़न मुरादाबाद चला गया था। अगले कलेक्टर के बच्चों से उसकी नहीं पटी और उन्होंने कुत्ते से कटवा दिया था। उसके बाद घर की नौकरानी सीता से अपनापन पाकर उसका व्यक्तित्व भी गिर गया था। वह घर में दुत्कारा जाता था। सब काम उसे ही करने पड़ते थे। वह तीन साल नौवीं में फेल होने के बाद दसवीं में पहुँचा था। इसके लिए उसे घोर अपमान झेलना पड़ा था।

DISHA™ Publication Inc

प्रस्तुत कहानी बालमन के अकेलेपन का चित्रण प्रस्तुत करती है कि किस प्रकार हम अपनों के होते हुए भी अकेले हो जाते हैं। बालक हैसियत नहीं चाहते, प्यार चाहते हैं। वह प्यार उसे कहीं से भी मिलता है तो वे उसी के हो जाते हैं।

काव्य खण्ड

काव्य की रसानुभूति, सुनकर तभी प्राप्त होती है, जब काव्य सजगतापूर्वक भाषा-प्रवाह, उचित लय, ताल में पढ़ा जाए। काव्य पाठ करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पद्य, गद्य नहीं है। गद्य की तरह वाचन से काव्य अरुचिकर हो जाता है। विद्यार्थियों की सुविधानुसार सभी काव्य पाठों का संक्षिप्त रूप दिया जा रहा है।

कबीरः साखी

'साखी' का अर्थ सीख भी होता है। कबीर जी समाज को देखकर तथा अनुभव करके ही बोलते थे। उनका ज्ञान साक्ष्य अनुभव का निचोड़ है।

कबीर जी कहते हैं कि हमें ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जो मन के घमंड को खत्म कर दे। स्वयं के साथ-साथ दूसरे के मन को भी शीतल कर दे। कस्तूरी तो मृग की नाभि में होती है और वह सब जगह ढूँढ़ता है। इसी प्रकार राम तो सबके हृदय में हैं, बंदा उसे यहाँ-वहाँ ढूँढ़ता है। जहाँ अहंकार है, वहाँ ईश्वर नहीं रहता। कबीर जी कहते हैं कि संसार अनजान है तो सुखी है, मैं जाग रहा हूँ तो दुखी हूँ। राम से बिछुड़कर आत्मा दुखी है। कोई मंत्र उसका उपचार नहीं कर पाता। कबीर जी कहते हैं कि निदंक आपकी कमियों को, दोषों को बिना साबुन-पानी के साफ कर देता है। सारा संसार ग्रंथ पढ़ता है परंतु कोई पंडित नहीं हुआ। यदि प्रेम का एक अक्षर पढ़ ले तो पंडित हो जाते हैं। कबीर जी कहते हैं कि हम तो मशाल हाथ में लेकर अपना ही घर (अहं) जलाने चले हैं। जो हमारे साथ हो तो वह अपना घर जलाकर ईश्वर को पा ले।

मीराः पद

मीरा मध्यकालीन कृष्ण भक्त कवयित्री थीं। वह श्रीकृष्ण को ही अपना आराध्य एवं सर्वस्व मानती थीं। मीरा की भक्ति में दास्य भाव था।

(1) मीरा अपने प्रभु से अपनी पीड़ा हरने की विनती करती हैं, क्योंकि उन्होंने द्रोपदी की लाज बचाई थी, नरहरि का रूप धारण कर डूबते गजराज को बचाया था और हाथी का कष्ट दूर किया था।

(2) मीरा प्रभु से कहती हैं कि हे प्रभु! मुझे अपना नौकर रख लो। मैं सुबह उठकर आपके दर्शन पाऊँगी, आपके बाग-बगीचे लगाऊँगी। वृंदावन की गलियों में गोविंद की लीला गाऊँगी। आपकी सेवा करके दर्शन प्राप्त होंगे और खर्चे के लिए (वेतन) आपका स्मरण पा लूँगी। मैं भक्ति भाव का साम्राज्य पा लूँगी। जिस मोहन ने मोर-मुकुट और पीतांबर धारण किया है, वह मुरली वाला वृंदावन में गाय चराता है। उसी साँवरियाँ के दर्शन पाने के लिए ऊँचे-ऊँचे महलों में कुसुंबी साड़ी पहनकर आधी रात में प्रभु दर्शन दो। श्री यमुना जी के किनारे प्रभु दर्शन दो, क्योंकि मेरा हृदय अधीर हो रहा है। हे प्रभु! आप ही मेरे सब कुछ हो।

बिहारीः दोहे

बिहारी के दोहे गागर में सागर कहे जाते हैं। बिहारी के दोहे अर्थगांभीर्य और सारगर्भित हैं। बिहारी के दोहे व्यावहारिक, ज्ञानपरक और श्रृंगारपरक हैं। बिहारी श्रीकृष्ण भक्त श्रृंगारिक कवि हैं।

श्याम के साँवले शरीर पर पीतांबर इस प्रकार शोभा पाते हैं, जैसे नीलमणि पत्थर पर सूर्य का प्रकाश पड़ता हो। तपोवन के प्रचंड तापमान ने साँप-मोर और मृग-बाघ सबको एक जगह रहने पर मजबूर कर दिया है। बिहारी जी श्रीकृष्ण-गोपी लीला का वर्णन करते हुए बताते हैं कि गोपी श्रीकृष्ण की बातों का रस लेने के लिए उसकी मुरली छिपा लेती है। आँखों ही आँखों में इशारे करती है परंतु

DISHA™ Publication Inc

पूछने पर मना कर देती है। यहाँ बाल-लीला प्रेम की पराकाष्ठा है। भरे भवन में आँखों ही आँखों में सब बातें हो जाती हैं। कहना-सुनना, रीझना-खीजना, मिलना, खिलखिलाना, लजाना नैनों ही नैनों में बातें होती हैं। कवि बिहारी जी रहस्यवाद की भक्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं- ज्येष्ठ महीने की दोपहर में जिस प्रकार छाया ढूँढ़ते हैं, वैसे ही आत्मा गहन वन में बैठकर शरीर रूपी भवन में घुस बैठी। कवि कहता है कि उसके हृदय की बात सब तेरे हृदय ने कह दी, जो कागज पर लिखते हुए भी लज्जा आ रही थी। बिहारी अपने कुल का वर्णन करते हुए कहते हैं कि चंद्र ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए और अपनी इच्छा से ब्रज में आए। हे केशव, हे पिता! मेरे सब कष्ट-क्लेश हर लो। भक्ति का दिखावा करने वाला माथे पर तिलक छापता है, माला हाथ में धारण करता है और जाप का एक काम नहीं करता, परंतु सच्चे भक्त का मन राम में रमता है।

मैथिलीशरण गुप्तः मनुष्यता

गुप्त जी श्रीराम भक्त कवि हैं। ये अपने जीवनकाल में ही राष्ट्रकवि के रूप में विख्यात हो गए थे। कवि पिता के बेटे जन्म से ही काव्य प्रतिभा लेकर उत्पन्न हुए थे। कवि गुप्त जी के काव्य समग्रता लिए हुए हैं। प्रस्तुत पाठ में कवि परहित का महत्व बताते हुए कहता है कि सोचो जब तुम मरणशील हो, तब भी मृत्यु से न डरो। मृत्यु भी ऐसी हो कि सब लोग याद करें। तुम्हारी मृत्यु व्यर्थ न हो। सिर्फ अपनों के लिए ही जीना-मरना तो पशु-प्रवृति है। मनुष्य वही है जो दूसरों के लिए मरे। उदार व्यक्ति की ही कीर्ति फैलती है। पृथ्वी भी उसी के प्रति कृतार्थ होती है, और सारी सृष्टि उसी उदार को पूजती है। उसी मनुष्य में मनुष्यता है जो विश्व में अखंड भाव भर दे।

भूख से पीड़ित रतिदेव ने हाथ का भोजन दान कर दिया। दधीचि ने हड्डियाँ तथा राजा शिवी ने अपने शरीर का माँस दान कर दिया। कर्ण ने खुशी से अपना कवच दे दिया। इस मरणशील शरीर के लिए अनादि आत्मा क्यों डरे?

सहानुभूति ही मानव की 'महा पूँजी है'। स्वयं पृथ्वी भी सदा खुशी देती है। भगवान बुद्ध ने मान्यताओं का विरोध कर दया-धर्म का संदेश दिया। कवि कहता है कि उदार वही है जो परोपकारी है। वही मनुष्य है। मनुष्य को धन संपत्ति के मद में अंधे नहीं होना चाहिए। यहाँ ईश्वर के होते हुए कोई अनाथ नहीं है। दीनदयाल प्रभु सबका ध्यान रखते हैं। कवि कहता है कि देवताओं का आशीर्वाद उसी को मिलता है जो आपस में एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। परम पिता परमात्मा सबका एक है। एकमात्र मनुष्य ही के पास विवेक है। कर्म के फलों के अनुसार हम में भेद हैं, परंतु सबकी आत्मा में समानता है। उस मनुष्य का जीवन अर्थहीन है जो अपने भाई की परेशानी में काम न आए। कवि भिन्नता मिटाने और मेलमिलाप बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहता है कि अपने इच्छित मार्ग पर खुशी से विघ्न-बाधाओं को धकेलते हुए चलो। आपस में मतभेद कभी हमारे प्यार पर हावी न हों। सभी पंथ-संप्रदायों की एक ही शिक्षा है- मानवता। सभी का निचोड़ यही है कि अपनी उन्नति के साथ-साथ सबका सहारा बनता चले, वही वास्तव में मनुष्य है।

सुमित्रानंदन पंतः पर्वत प्रदेश में पावस

सुमित्रानंदन पंत उत्तराखंड की प्रकृति की गोद में जन्मे। वे काव्यकला के साथ ही उत्पन्न हुए थे। प्रकृति से गहरे रूप से जुड़े थे। प्रस्तुत कविता में भी कवि ने अपने आँखों देखे प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है।

कवि कहता है कि पहाड़ों पर वर्षा ऋतु में प्रकृति पल-पल अपना रूप बदलती है। करधनी के आकार का पर्वत अपने हजारों सुमन रूपी आँखों से नीचे पानी में अपनी विशाल परछाई देख रहा है। पहाड़ की तलहटी में तालाब दर्पण का काम करता है। झरने मोती की लड़ियों से शृंगार कर पर्वत का गुणगान करते हैं। पेड़ पर्वत के सीने पर ऊँचे उठकर अपनी महत्वाकांक्षा बताते हैं। अनंत शांत आकाश को चिंतित हो एकटक देख रहे हैं। ऐसा लगता है कि धवल चमकीले बादल रूपी पंख लगाकर पर्वत उड़ना चाहते हों।

अंबर धरती पर जलधारा बनकर टूट पड़ा। बरसात में शाल के ऊँचे वृक्ष मानो धरती में खो गए और सरोवर से धुआँ उठने लगा। इंद्र बादलों के यान पर सवार होकर अपनी जादुई नगरी में विचरण कर रहा है। कवि ने पहाड़ों की वर्षा का मनोहारी वर्णन किया है।

महादेवी वर्मा: मधुर-मधुर मेरे दीपक जल

महादेवी जी छायावाद की प्रसिद्ध कवयित्री हैं। उनकी कविताएँ अंतर्मन का दर्पण होती हैं। प्रस्तुत कविता में कवयित्री औरों की अपेक्षा स्वयं को समझाने का प्रयास करती हुई कहती है कि हे मेरे मन के मधुर दीपक! तुम युगों-युगों प्रतिदिन, प्रतिपल प्रियतम के पथ को प्रकाशित कर। अपार धूप का रूप ले सुगंध फैल गई है। हे कोमल मन! तू भी मोम बनकर घुल जा। इस जीवन को अपने कण-कण से असीमित प्रकाश का सागर दे। सब तुमसे ही प्रकाश की आस लगाए हैं। सारा विश्व पतंगे की भाँति पछताता है कि तुम्हारे साथ नहीं जल पाया। हे दीपक! थरथराकर जल। हे मन! आशावान होकर देख आकाश में असंख्य दीपक स्नेहहीन हैं। पानी से भरे हुए सागर का हृदय भी जल उठता है, जब बादल बिजली लेकर घिर आता है। हे मेरे मन रूपी दीपक! हँस-हँसकर जल। कवयित्री अपने-आप को प्रकृति में साकार कर सचेत बनाए रखना चाहती है।

वीरेन डंगवाल: तोप

वीरेन डंगवाल जी का जन्म टिहरी गढ़वाल में प्रकृति के सौंदर्य खजाने में हुआ। प्राध्यापक होने और पत्रकारिता से जुड़े होने के कारण वे इतिहास पर पैनी दृष्टि रखते हैं। प्रस्तुत पाठ में कवि कंपनी बाग में रखी तोप को चेतावनी मानते हैं। वे उन ताकतों को सावधान करना चाहते हैं जिनके इरादे हमारे देश के लिए नेक नहीं हैं। कंपनी बाग के दरवाज़े पर रखी गई तोप 1857 के अत्याचार की प्रतीक है। इसको साल में दो बार चमकाया जाता है। कंपनी बाग में आने वाले सैलानियों को तोप बताती है कि किसी जमाने में वह जबरदस्त थी और दुश्मनों के छक्के छुड़ा देती थी। अब तो वह बच्चों की सवारी के ही काम आती हैं। चिड़ियाँ उसके अंदर घुसकर यह संदेश देती हैं कि कोई तोप कितनी भी विकराल हो, एक-न-एक दिन शांत हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि अत्याचार का साम्राज्य स्थायी नहीं होता।

कैफ़ी आज़मी: कर चले हम फ़िदा

कैफ़ी आज़मी की गिनती आज के प्रगतिवादी उर्दू शायरों की अग्रिम पंक्ति में होती है। कैफ़ी आज़मी की कविताओं और ग़ज़लों में राजनीतिक जागरूकता व सामाजिक सरोकार होता है। इनकी कविताओं में कोमल भावना होती है।

प्रस्तुत पाठ 'हकीकत' फिल्म का गाना है। इसमें सैनिकों की मर्म पुकार है जिन्हें अपने किए पर नाज है और बलिदान देते समय देशवासियों से देश सेवा की अपेक्षा करते हैं। सैनिक कहते हैं कि हम अपने देश पर जान, तन सब बलिदान कर चले हैं। जब हमारी साँस रुक रही थी, नब्ज जम गई थी हिमालय की बर्फ में, फिर भी हमने कदमों को नहीं रुकने दिया। अपने सिर कटवाकर भी हमने हिमालय का सिर नहीं झुकने दिया। मरते दम तक हम सीना तानकर मौत के समने डटे रहे। कवि कहता है कि जिंदा रहने के मौसम तो बहुत हैं, परंतु देश पर मर मिटने का, कुर्बानी देने का अवसर रोज़ नहीं मिलता है। आज धरती अपने लालों के खून से रंगकर दुलहन बन गई है। हम अब देश को तुम्हारे हवाले करके इस संसार से विदा ले रहे हैं।

सैनिक जवानों से आह्वान करता है कि देश पर मर मिटने वालों की कमी न हो, कुर्बानी की राह पर नए काफ़िले आगे बढ़ते रहें। हमारे शहीद होने के बाद देश की जीत का उत्सव होगा। अब जिंदगी मौत से गले मिल रही है। हे देश के नौजवानों! अब सिर पर कफ़न बाँधकर देश पर मर मिटने के लिए तैयार हो जाओ, क्योंकि अब देश तुम्हारे हवाले है। अपने खून से सरहद पर लक्ष्मण रेखा खींच दो ताकि कोई रावण हमारी माँ का दामन न छू सके। अब तुम्हीं राम हो, तुम्हीं लक्ष्मण हो। यह देश अब तुम्हारे हवाले है अर्थात् सैनिकों ने अपना धर्म निभा दिया; परंतु देश की रक्षा का दायित्व प्रत्येक देशवासी का होता है।

रवींद्रनाथ ठाकुर: आत्मत्राण

रवींद्रनाथ ठाकुर कई प्रतिभाओं के पुंज थे। वे नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले भारतीय थे। प्रस्तुत कविता में कवि मनुष्य को आत्मनिर्भर बनने का प्रोत्साहन देते हुए कहता है कि हे प्रभु! मुझे विपदाओं से बचाओ; ये मेरी प्रार्थना नहीं है, अपितु इतनी दया करना कि मैं विपदा से न डरूँ। कितना भी कष्ट हो, संताप हो, चाहे कोई साथ न हो, फिर भी मैं दुख पर विजय पा लूँ। कोई सहायता न मिलने पर भी आत्मबल कमजोर न हो। हे प्रभु! इस संसार में कितनी भी हानि क्यों न उठानी पड़े, परंतु मन न टूटे, हिम्मत न हारूँ।

हे प्रभु! अगर मैं डूब रहा हूँ तो मुझे बचा लो; ये मेरी प्रार्थना नहीं है, अपितु मुझे तैरने की शक्ति दो। दुखों के पहाड़ आने पर उसे छोटा करने की विनती मेरी नहीं है। बस उसे सहन करने की, पार पाने की शक्ति मुझे दो। सुख के दिनों में भी मैं सिर झुकाकर रहूँ, अपने आप को पहचानूँ, बस यही मेरी प्रार्थना है। हे प्रभु! दुखों की रात्रि में मेरे साथ धोखा हो, तो भी हे करुणामय! मैं आप पर संदेह न करूँ। इसका अर्थ यह है कि हमें कोई तैरना सीखा सकता है, लड़ना सीखा सकता है, परंतु तैरने-लड़ने-जीतने की कोशिश स्वयं ही करनी है। जब तक हम स्वयं अपनी सहायता नहीं करेंगे तो कोई हमारी सहायता नहीं कर सकता।

DISHA™
Publication Inc